'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 22 अंक 10 4 अगस्त 2018 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

'क्षत्रिय गुमराह तो संसार गुमराह'

आदि काल से इस संसार को क्षत्रियों ने मार्ग दिखाया है। क्षत्रिय यदि मार्गच्युत होता है, गुमराह होता है तो संसार गुमराह हो जाता है। व्यवस्थाएं छिन्न-भिन्न हो जाती हैं। 2000 वर्ष पहले ऐसा ही हुआ। शिक्षा का क्षेत्र क्षत्रियों के कार्य क्षेत्र से बाहर हुआ। क्षत्रियों ने शिक्षा छोड़ी परिणाम स्वरुप शिक्षा का अर्थ बदल गया। धर्म के अर्थ बदल गए। धर्म आजीविका का साधन बन गया। धर्म के नाम पर अनेक रुढ़ियां पनपी क्योंकि क्षत्रियों के शिक्षा से दूर होने के कारण बहुसंख्य वर्ग को शिक्षा से दूर कर दिया गया और अशिक्षित लोगों को थोड़े से शिक्षित लोगों ने अपने स्वार्थवश गुमराह किया।

गुरुपूर्णिमा के अवसर पर अपने चुनींदा शिष्यों को संबोधित करते हुए स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज ने संघ प्रमुख श्री की ओर मुखातिब होते हुए उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि न्याय और रक्षा का क्षेत्र भी क्षत्रिय का ही है। न्याय करने का काम क्षत्रियों के अतिरिक्त किसी ओर के पास होगा तो वे अपने अधिकार का दुरुपयोग करेंगे और विगत दो हजार वर्षों से ऐसा ही हुआ। न्याय करने वाले लोगों की न्याय बुद्धि क्षत्रियत्व के अभाव में निजी स्वार्थों से पराभूत हुई और बहुसंख्य जनता के साथ अमानवीय व्यवहार की शुरुआत हुई जिससे समाज विभाजित हुआ। न्याय की तरह रक्षा भी क्षत्रियों का ही क्षेत्र है। क्षत्रियत्व के अभाव में रक्षा संभव ही नहीं है। इसलिए आज की व्यवस्था में पनपी विकृतियों को ठीक करने का एक मात्र उपाय क्षत्रियों का जागना है। इसलिए जागो, उठो और संसार को जगाओ। क्षत्रिय यदि भगवान कृष्ण के संदेश गीता को समझकर उसे जन-जन तक पहुंचाने का बीड़ा उठाएं तो धर्म की स्थापना होगी। व्यवस्था पनपेगी और प्राणी मात्र अपने शाश्वत उद्देश्य की ओर चलायमान होगा क्योंकि भगवान का द्वापर में दिया गया संदेश सृष्टि के प्रारम्भ में दिए गए संदेश की ही पुनरावृत्ति है और वही संदेश सृष्टि के उद्देश्य की प्राप्ति की एकमात्र कूंजी है। सृष्टि का समस्त ज्ञान उसी संदेश का विस्तार है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

युवा मार्गदर्शन एवं संवाद कार्यशालाएं

विगत जनवरी माह से संघ के कर्मचारी प्रकोष्ठ के तत्वावधान में चल रही युवा मार्गदर्शन एवं संवाद कार्यशालाओं को इस माह दो भागों में विभक्त किया गया। अब तक हुई कार्यशालाओं में 18 से 35 वर्ष के युवाओं को वर्तमान में विभिन्न सरकारी सेवाओं एवं अन्य क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों की जानकारी व तद्नुकूल तैयारी के साथ-साथ शोषित पीड़ित व्यक्ति के लिए संविधान में उपलब्ध साधनों के बारे में बताया जाता था। इस बार इन दोनों विषयों पर अलग-अलग कार्यशालाएं आयोजित की गईं। कर्मचारी प्रकोष्ठ के तत्वावधान में रोजगार विषयक कार्यशाला चित्तौड़गढ़ में रखी गई वहीं दूसरे विषय पर अधिवक्ता प्रकोष्ठ के तत्वावधान में सरदारशहर में कार्यशाला रखी गई। **(शेष पृष्ठ 5 पर)**

'केन्द्रीय कार्य योजना बैठक संपन्न'

संघ में शिविरों का शिक्षण सत्र विद्यालयों के शिक्षण सत्र के अनुसार चलता है क्यों कि संघ का कार्य क्षेत्र मुख्यतः विद्यार्थी हैं। विद्यार्थियों के अवकाश के आधार पर ही संघ के शिविर आदि कार्यक्रम तय होते हैं। इसलिए जुलाई से दिसम्बर तक का समय संघ शिक्षण के लिए महत्त्वपूर्ण होता है। मई में होने वाले उच्च प्रशिक्षण शिविर के उपरान्त सभी लोग अपने-अपने कार्य क्षेत्र में जाकर सहयोगियों से चर्चा करते हैं एवं प्रांत व संभागानुसार कार्य योजना बनाते हैं। तदुपरांत केन्द्रीय कार्य योजना बैठक होती हैं जिसमें सभी की प्रांतवार एवं संभागवार कार्य योजना पर चर्चा की जाती है। 15 जुलाई को केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में माननीय संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में संघ के 73वें वर्ष के शेष समय के लिए कार्य योजना बनाई गई।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

महापुरुषों के मन में उपजा संकल्प जब कर्म में परिणत होता है तब ही महान कार्य संपादित होते हैं। इस प्रकार संकल्प की दृढ़ता उनका प्रमुख गुण होता है। एक बार जो तय कर लिया उसे धरातल पर कर्म में परिवर्तित करना उनका स्वभाव होता है और यही स्वभाव उन्हें हर अनुकूल प्रतिकूल परिस्थिति में अपने संकल्प को दृढ़ बनाए रखने को प्रेरित करता है। यही दृढ़ता उनका अनुसरण करने वालों को प्रेरणा दिया करती है। पूज्य तनसिंह जी ऐसे ही दृढ़ संकल्पवान पुरुष थे। उनका संकल्प श्री क्षत्रिय युवक संघ उनकी दृढ़ता के कारण ही हर उतार-चढ़ाव को झेलता हुआ बढ़ता रहा और आज भी उनकी ही दृढ़ता की प्रेरणा से गतिमान है। उनकी संकल्प के प्रति दृढ़ता के अनेक उदाहरण है। ऐसा ही एक उदाहरण जनवरी 1979 का है। पूज्य तनसिंह जी प्रतिवर्ष चौहटन में एक पहाड़ी पर स्थित देवी मंदिर वैर का थान जाया करते थे। प्रतिवर्ष की भांति 1979 में भी उन्होंने वैर का थान पैदल जाने का निश्चय किया। एक ऊंट गाड़े को सामान लेकर आगे रवाना किया एवं स्वयं पूज्य नारायणसिंह जी रेडा व हरिसिंह जी स्यानण के साथ बाड़मेर से पैदल रवाना हुए। 8 किमी पैदल चलने के पश्चात् भोजन किया एवं ऊंट गाड़े को आगे 5 किमी बाद रुकने का निर्देश देकर रवाना किया। स्वयं पैदल रवाना हुए लेकिन मार्ग में उदरशूल का दर्द प्रारमभ हो गया। दर्द इतना असहनीय था कि हर 20 कदम पर रुकना पड़ता। रुकते, बैठते, थोड़ा विश्राम करते और आगे रवाना हो जाते। इस प्रकार दर्द को सहन करते-करते जैसे-तैसे 5 किमी पहुंच कर चाय पी। वहां से गाड़ी को 20 किमी बाद निमड़ी रुकने का निर्देश दे फिर रवाना किया। अपने दर्द की परवाह किए बिना पीछे-पीछे फिर रवाना हुए। दर्द ने अपना असर फिर दिखाना शुरू किया। पहले वाली 20 कदम की यात्रा अब 5-7 कदम तक सीमित हो गई। हर 5-7 कदम बाद रुकते, बैठते, थोड़े लेटते एवं उठकर फिर रवाना हो जाते। साथ में यात्रा कर रहे पूज्य नारायणसिंह जी एवं हरिसिंह जी ने रुकने का निवेदन किया ऊंट गाड़ी को वापिस बुलाकर उसमें बैठकर आगे की यात्रा का आग्रह किया लेकिन संकल्प तो पैदल जाने का था इसलिए गाड़ी में कैसे जाते। सर्द रात में असहनीय दर्द को सहन करते-करते चलते रहे और अंत में रात्रि 1 बजे निर्धारित स्थान पर पहुंच कर भोजन विश्रामादि किया। इस प्रकार अपने स्वास्थ्य की प्रतिकूल परिस्थिति के बावजूद पैदल यात्रा करने के अपने संकल्प को पूरा किया एवं चौथे दिन वैर का थान पहुंचे। शरीर की अशक्तता को दूर करने के लिए बार-बार आग जलाकर शरीर को गर्म कर सर्दी के कारण बढ़ी हुई दर्द की तीव्रता को कम करने का प्रयास करते रहे लेकिन अपने संकल्प एवं यात्रा को स्थगित नहीं किया। ऐसे ही संकल्पवान लोगों के पीछे संसार चला करता है। आज हम सब देख रहे हैं कि लाखों युवाओं की वे प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से प्रेरणा बने हुए हैं, यह उनकी संकल्प शक्ति का ही परिणाम है। हम भी यदि उनके मार्ग पर चलना चाहते हैं तो अपने संकल्प को हर अनुकूलता प्रतिकूलता में जीवित रखना पड़ेगा।

जीवनोपयोगी जानकारी-9

- अभयसिंह रोडला

विगत अंकों में हमने गणित विषय वर्ग से 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् उपलब्ध कैरियर विकल्पों के बारे में जाना तथा उनमें से तीन मुख्य क्षेत्रों - अभियांत्रिकी, उड्डयन तथा सामुद्रिक क्षेत्र की विस्तृत जानकारी प्राप्त की। प्रतियोगी परीक्षाओं संबंधी चर्चा के समय इन पर तथा अन्य क्षेत्रों पर और विस्तार से वर्णन किया जाएगा।

अब हम जीव विज्ञान विषय वर्ग (जिसे सामान्यतया PCB कहा जाता है) से 12वीं उत्तीर्ण करने के पश्चात् उपलब्ध विकल्पों को जानेंगे। सामान्यतया जीव-विज्ञान विषय चयन करने के पीछे अधिकांश विद्यार्थियों का उद्देश्य चिकित्सक बनने का रहता है, क्योंकि चिकित्सा क्षेत्र में कैरियर निर्माण का आधार जीव-विज्ञान विषय वर्ग ही है। सर्वप्रथम हम उन कोर्स/डिग्रियों के बारे में जानेंगे, जो PCB (फिजिक्स, केमिस्ट्री, बायोलॉजी) के साथ 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्यार्थी के लिए विकल्प के रूप में उपलब्ध है। इन कोर्सेज/डिग्री की सूची निम्न प्रकार है :

(1) MBBS - बैचलर ऑफ मेडिसिन एण्ड बैचलर ऑफ सर्जरी को संक्षिप्त रूप से MBBS के नाम से जाना जाता है। यद्यपि मूल रूप से इसका लेटिन स्वरूप Medicinace Beccalaureus, Beccalaureus Chirurgine है।
(2) BHMS बैचलर ऑफ होमिओपैथी मेडिसिन एण्ड सर्जरी।
(3) BAMS बैचलर ऑफ आयुर्वेदिक मेडिसिन एण्ड सर्जरी।
(4) BUMS बैचलर ऑफ युनानी मेडिसिन एण्ड सर्जरी।
(5) BNYS बैचलर ऑफ नेचुरोपैथी एण्ड योगा साईन्स।
(6) BDS बैचलर ऑफ डेन्टल सर्जरी।
(7) BVSc Ah - बैचलर ऑफ वेटनरी साईन्सेज एण्ड एनिमल हस्बेन्ड्री
(8) B.Sc - बैचलर ऑफ साईन्स (PCB विषयों के साथ स्नातक स्तर का अध्ययन)
(9) B.Sc in Microbiology
(10) B.Sc in Biotechnology
(11) B.Sc in Bio Chemistry
(12) B.Sc in Nursing
(13) B.Sc in Physiotherapy
(14) B.Pharma - Bachelor in Pharmacy
(15) B.Sc. in Agriculture / Horiticulture

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

आवड़ तूठी भाटीयां - करणी राठौड़ां

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

चारण कुल में समय-समय पर भगवती ने कन्या रूप में जन्म लिया है और ये कन्याएं देवी के रूप में जन-जन में पूजित हुई हैं। देवी आवड़ जी का जन्म सऊंवा शाखा के चारण कुल में हुआ। इनके पूर्वज सिन्ध (पाक) के सऊवान क्षेत्र में रहते थे। बाद में ये लोग माड़धरा (जैसलमेर का वर्तमान क्षेत्र) आकर बस गए। इनके वंश में मामड़िया जी चारण हुए जिन्होंने सन्तान प्राप्ति के लिए देवी हींगलाज (वर्तमान में पाक में बिलोचिस्तान में) की सात बार यात्राएं की। हींगलाज मां की कृपा से मामड़िया के सात पुत्रियां एवं एक पुत्र जन्मा। विक्रम संवत् 808 के चैत्र सुदी नवमी मंगलवार को बड़ी पुत्री के रूप में आवड़ जी ने जन्म लिया। नाथ सम्प्रदाय से दीक्षित होने के कारण इन्हें 'आईनाथ' कहा जाता है। इनकी अन्य बहने भी देवी स्वरूपा पूजी जाती है। इनके चाचा खतरीया की पुत्री लांगदे गुजरात में खोड़ियार माता के रूप में पूजी जाती है। आवड़ जी के भाई भी कालान्तर में गुजरात चले गए जहां आज भी उनके वंशज है। उनका नाम मेहरखजी था।

लोद्रवा के राजा जमभाण परमार ने माता आवड़ का देवी स्वरूप राजसिक पूजन किया था। तनोट के राजा राव तणु भाटी ने भादरिया में जाकर अपनी रानी के साथ दर्शन किए एवं बाद में उनका तनोट में मंदिर बनाया। आवड़ जी ने तणु के बेटे विजयराज को अपनी दिव्य चूड़ प्रदान की थी। इसी से विजयराज चूड़ाला के नाम से प्रसिद्ध है। घंटिये राक्षस को मारने के कारण घंटियाली राय, तेमड़े राक्षस को मारने के कारण तेमड़ेराय के नाम से पूजी जाती हैं। लोक आख्यानों में इनके अनेक चमत्कार बताए जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि विक्रम संवत् 999 को माघ सुदी सप्तमी को तेमड़े राय पर्वत से एक प्रस्तरशीला पर बैठकर सातों बहने आकाश मार्ग से सुदूर हींगलाज मां में जाकर समा गई।

देवी करणी जी चारणों की मारू शाखा से थीं। जिसमें कीनिया चारण आते हैं। ये काठियावाड़ गुजरात के हलवद क्षेत्र में निवास करते थे। इन्हीं चारणों के एक वंशज तेरहवीं शताब्दी में जैसलमेर होते हुए जांगलू प्रदेश (बीकानेर) आए। उनका नाम भीभड़ कीनिया था। जांगलू के शासक सांखला परमार राजपूतों ने उन्हें उदक नामक गांव जागीर में दिया। भीभड़ जी के पांचवी पीढ़ी में मेहाजी कीनिया हुए जो जांगलू छोड़कल मांगलिया वाटी में मेहाजी मांगलिया के यहां चले गए। जहां उन्हें सवाप गांव जागीर में मिला। मेहाजी कीनिया का विवाह आढा चारणों में हुआ था उनकी पत्नी का नाम देवलबाई था। इन्हीं के घर विक्रम संवत् 1444 अश्विनी शुक्ला सप्तमी को मां करणी जी का जन्म हुआ। इनका बचपन का नाम रिद्धिबाई था। करणी जी का विवाह रोहड़िया शाखा के देपाजी बिठू के साथ हुआ था, परन्तु करणी मां सांसारिकता से ऊपर थे इसलिए उन्होंने अपनी बहन गुलाब बाई से अपने पति देवा जी का दूसरा विवाह कराया। करणी जी ने राठौड़ रिड़मल को आशीर्वाद दिया कि तुम्हारे वंशज 'नवकोटी मारवाड़ के स्वामी' होंगे। उन्होंने 1476 विक्रम संवत् में वैशाख शुक्ला दूज शनिवार को देशनोक की नींव रखी। विक्रम संवत् 1511 में करणी जी के पति देवाजी का स्वर्गवास हो गया। चित्तौड़ के दुर्ग में रिड़मल राठौड़ का वध हो गया तो उनके पुत्र राव जोधा का पाग दस्तुर माता ने अपने पुत्र पुण्यराज बिठू से कराया। विक्रम संवत् 1515 जेठ सुदी ग्यारस गुरुवार को मां करणी ने अपने हाथ से जोधा के किले जोधपुर की नींव रखी। नींव वाली जगह जोधा जी का फलसा कहलाती है। करणी जी ने जोधा को 28 पीढ़ी शासन का वर दिया था।

करणी जी ने जोधा के पुत्र बीका को जांगलू प्रदेश में राज्य स्थापित करने में मदद की। वहां शासनरत पूगल के भाटी शासक राव शेखा की पुत्री का विवाह राव बीका से कराया ताकि भाटी उसके लिए खतरा न बने।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर

विगत दिनों बालक एवं बालिकाओं के निम्न प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुए जिनमें समाज के युवकों एवं युवतियों ने संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली द्वारा क्षत्रियत्व का प्रशिक्षण लिया।

ताम्बड़िया : 26 से 29 जुलाई तक जोधपुर संभाग के भोपालगढ़ बिलाड़ा प्रांत के ताम्बड़िया गांव में शिविर सम्पन्न हुआ। शहीद अर्जुनसिंह स्मृति भवन में आयोजित इस शिविर का संचालन संभाग प्रमुख महेन्द्रसिंह गुजरावास ने भरतपाल सिंह दासपां, चैनसिंह साथिन, अमरसिंह गोपालसर, देवीसिंह बुड़ीवाड़ा आदि के सहयोग से किया। शिविर में ताम्बड़िया, पालड़ी सिद्धा, छापला, रुदिया, बिराणी, गादेरी, ओस्तरा, ताम्बड़िया कल्ला आदि गांवों के 92 स्वयंसेवकों ने चार दिन तक प्रशिक्षण लिया। शिविर में गांव के सभी समाज बंधुओं का पूरा सहयोग रहा। व्यवस्था का जिम्मा गोपालसिंह राठौड़ एवं उनकी टीम ने संभाला।

वल्लभीपुर : गुजरात के भाल प्रांत के वल्लभीपुर कस्बे में स्थित राजपूत छात्रावास में 14 से 16 जुलाई तक बालकों का प्रा.प्र.शि. संपन्न हुआ। शिविर का संचालन अजीतसिंह थलसर ने साथियों के सहयोग से किया। इस शिविर में अवाणियां, पछेगाम, नवाणियां, धोलेरा, थलसर, बड़ोदा आदि गांवों के अलावा भावनगर शहर की शाखाओं व धुंधका बोर्डिंग शाखा के शिविरार्थी प्रशिक्षण लेने पहुंचे। शिविर की व्यवस्था नवाणियां गांव के समाज बंधुओं ने की।

धुणासोल : संघ के बनासकांठा प्रांत के धुणासोल गांव में 21 से 23 जुलाई तक प्रा.प्र.शि. संपन्न हुआ जिसका संचालन अजीतसिंह कुणघेर ने भगवतसिंह पादरू, सुरतसिंह वातम, भगवानसिंह वलादर, अरविंदसिंह नारोली, परबतसिंह नारोली आदि के सहयोग से किया। विदाई संदेश में शिविर संचालक ने कहा कि पूज्य तनसिंह जी ने समाज की वेदना को अपना बनाकर उसकी भक्ति को ही ईश्वर की भक्ति बताया है। हमें उनके संदेश को समाज के हर घटक तक पहुंचाना है और शाखाओं के माध्यम से स्वयं के विकास के लिए अभ्यास जारी रखना है। धुणासोल गांव के संजयसिंह, चेतनसिंह, श्रवणसिंह आदि समाज बंधुओं ने उत्साहपूर्वक सब के सहयोग से शिविर की व्यवस्था का जिम्मा संभाला। इस शिविर में पीलुड़ा, नारोली, वलादर, मोटामेसरा, केसरगाम, कुभारा, वातम, फोरणा, धनकवाड़ा, चारंडा, चिमड़ा, दियोदर, लिबोणी, गोलगाम, ढीमा, मसाली, डेल, नालोदर, करबुण,जानावाड़ा, माडका, पालड़ी, रडोसण, वजापुर, कारेली, सोनेथ, लाखणी, भवानीपर (अंजार), जेलाणा, मोरवाड़ा, ईढ़ाटा, जेलाणा आदि गांवों के लगभग 160 स्वयंसेवकों ने तीन दिन प्रशिक्षण प्राप्त किया।

कच्छ में बालिका शिविर: गुजरात के कच्छ प्रांत में राजपूत कन्या छात्रावास में संघ का बालिका प्रा.प्र.शि. संपन्न हुआ। इस शिविर में कच्छ क्षेत्र की 70 बालिकाओं ने तीन तक संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली द्वारा क्षत्रिय नारी के धर्म की शिक्षा ली। शिविर का संचालन उर्मिला बा पच्छेगाम ने कल्पना बा वावड़ी, बिन्दु बा मलेकवदर व छात्रावास की गृहमाता चेतना बा जाड़ेजा के सहयोग से किया।

शाखा सम्पर्क यात्रा

बनासकांठा में चल रही शाखा सम्पर्क यात्रा के तहत स्थानीय स्वयंसेवक अवकाश के दिन किसी गांव में जाते हैं और वहां के समाज बंधुओं से सम्पर्क कर संघ चर्चा करते हैं व शाखा प्रारम्भ करवाते हैं। इसी कड़ी में 13 जुलाई को कुभारा गांव में सम्पर्क किया और इस अभियान के तहत पांचवीं शाखा का शुभारम्भ किया। कुभारा गांव के सरपंच व अन्य युवा साथियों ने हर गुरुवार को साप्ताहिक शाखा लगाने का निर्णय लिया एवं श्रवणसिंह वलादर ने इसकी जिम्मेदारी ली।

महेसाणा प्रांत में सम्पर्क

विक्रमसिंह कमाणा के नेतृत्व में स्वयंसेवकों के एक दल ने कड़ी तहसील के इराणा, विडज, सरसाव, नरगासण आदि गांवों में सम्पर्क यात्रा का आयोजन किया। इन गांवों के समाज बंधुओं को संघ का परिचय दिया एवं कार्य प्रणाली समझाई। 22 जुलाई को आयोजित इस सम्पर्क यात्रा के दौरान एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर का प्रस्ताव भी आया।

महाराव शेखाजी के नाम से आरओबी

जयपुर के झोटवाड़ा में झोटवाड़ा पुलिया के समानांतर बनने वाले रेलवे ओवर ब्रिज का नामकरण महाराव शेखाजी के नाम से रखा गया है। इस ओवर ब्रिज का शिलान्यास प्रदेश की मुख्यमंत्री के हाथों 2 जुलाई 2018 को किया गया है।

लेफ्टिनेंट अभिमन्यु बने बेस्ट कमांडो स्टूडेन्ट

मूल रूप से राजोद जिला नागौर एवं वर्तमान में शिवपुरी झोटवाड़ा जयपुर निवासी टी.एस. राठौड़ के सुपुत्र अभिमन्यु सिंह राठौड़ एन.डी.ए. एवं आई.एम.ए. से अपना प्रशिक्षण पूर्ण कर जून 17 में सेनाधिकारी बने थे। अभी इन्होंने छह माह चले 'यंग ऑफिसर्स कोर्स' एवं 'कमांडो कोर्स' में 'बेस्ट कमाण्डो स्टूडेन्ट' का खिताब हासिल किया है।

संपादकीय

विश्वास, अविश्वास और मर्यादा

संसद के मानसून सत्र में तेलगु देशम पार्टी द्वारा संसद के पटल पर सरकार के विरुद्ध रखा गया अविश्वास प्रस्ताव भारी बहुमत से गिर गया। सरकार ने तकनीकी रूप से संसद का विश्वास जीत लिया और विपक्ष तकनीकी रूप से हार गया। यह परिणाम पूर्व में ही तय था इसलिए तकनीकी रूप से किसी बड़े फेरबदल की कोई संभावना नहीं थी इसलिए जो जीते वे भी मानते हैं कि वे जीत गए और जो हारे उनका लक्ष्य भी हराना नहीं था इसलिए उनकी भी एक तरह से जीत ही हुई। इस प्रकार इस हार और जीत में न सरकार हारी और न विपक्ष हारा लेकिन फिर भी हार तो हुई है। यह हमारी खोज का विषय है कि हार किसकी हुई? संसद में अनर्गल आरोप लगाने से हार किसकी हुई? देश की सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी के नवीनतम अध्यक्ष द्वारा की गई बचकानी हरकतों से हार किसकी हुई? नफरत को प्यार से जीतने के लिए गले मिलने की प्रतीकात्मक पहल के बाद अपने साथियों की तरफ किए गए आंख के अशोभनीय इशारे से हार किसकी हुई? प्रधानमंत्री जी द्वारा अविश्वास प्रस्ताव के दौरान विपक्ष द्वारा उठाए गए प्रश्नों का जवाब देने की अपेक्षा पुरातन पार्टी के नवीनतम अध्यक्ष के वक्तव्य पर तथा पुरानी अध्यक्ष पर अपने आपको केन्द्रित करने से किसकी हार हुई? संसद में सर्कस का दृश्य उपस्थित होने पर किसकी हार हुई? तो निश्चित रूप से न हारने वालों की हार हुई है और न जीतने वालों की हार हुई है, हार हुई है तो भारत की हो रही है, भारत की लोकतांत्रिक मर्यादाओं की हो रही है और इससे भी आगे की बात कहें तो हार हम सबकी हो रही है। हमारे विश्वास की हो रही है और इस हार के प्रति न सरकार चिंतित है और न ही विपक्ष चिंतित है। सरकार अपने नेता की छवि बचाने में व्यस्त है और विपक्ष अपने नेता की छवि बनाने में व्यस्त है। इस बनाने और बचाने के बीच इस देश की स्वस्थ परम्पराओं से प्रेम करने वाले हर संवेदनशील नागरिक की भावनाएं रौंदी जा रही हैं और भारतीयता तार-तार हो रही है।

भारतीयता को तार-तार करने की यह प्रतिस्पर्धा केवल संसद में ही चलती हो ऐसा नहीं है बल्कि बाहर भी बदस्तूर जारी है। हर कोई स्वयं को दूसरे से इक्कीस सिद्ध करने को तत्परता से प्रयासरत है। इसीलिए तो हिन्दू-पाकिस्तान की बात की जाती है। जिनका पढ़ना, लिखना, सोचना, चिंतन करना आदि सब अंग्रेजी में होता है। जिन्होंने हिन्दी भी अंग्रेजी की सहायता से पढ़ी हो। जो भारतीय संस्कृति की जानकारी भी विदेशियों द्वारा लिखी गई पुस्तकों से हासिल करते हैं उनको क्या पता कि भारत कभी हिन्दू पाकिस्तान नहीं हो सकता और भारत यदि हिन्दू पाकिस्तान होता तो संसार से लगभग समाप्त हो चुकी पारसी संस्कृति भारत में जिंदा नहीं होती। यदि भारत हिन्दू पाकिस्तान होता तो आप इस प्रकार वक्तव्य देने की हिम्मत ही नहीं कर पाते। लेकिन दूसरी तरफ भारतीयता इस बात को लेकर भी अपनी हार की संभावना से चिंतित है कि यूरोपीय राष्ट्रवाद की प्रेरणा से या अरब में पनपे कट्टरवाद की प्रेरणा से कुछ लोग उसी के नाम का सहारा लेकर भीड़ के न्याय की व्यवस्था लागू करना चाहते हैं। इसीलिए कभी किसी गाय की हत्या के नाम पर किसी की हत्या कर दी जाती है तो कभी विरोधी विचार वालों पर आदिम न्याय व्यवस्था का उपयोग किया जाता है। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि विचार स्वातंत्र्य के नाम पर इस देश की सम्मानीय परम्पराओं का मखौल उड़ाकर प्रगतिवाद का ढोल पीटने वाले अपराध नहीं कर रहे लेकिन उस अपराध की सजा देने का काम यदि भीड़ के हवाले कर दिया तो नक्सलियों और हमारे में क्या अंतर रह जाता है? भीड़ की इस प्रकार की न्याय व्यवस्था को अपने परोक्ष-अपरोक्ष वक्तव्यों से प्रोत्साहित करने वाले उस भीड़ से ज्यादा बड़े दोषी हैं फिर चाहे वे 1984 वाले हों या आज वाले। आज वाले जब अपने कार्यकर्ताओं को सोशल मीडिया पर झूठी खबरें फैलाने के फायदे गिनाकर फिर झूठी खबरें न फैलाने की नसीहत देते हैं तो इसे नसीहत माना जाए या ऐसी झूठी खबरें फैलाने का निर्देश माना जाए, यह हर समझदार आदमी समझता है लेकिन समझकर भी कुछ भी न कर पाने को मजबूर है क्यों कि उसके पास विकल्पों का अभाव है। जिधर भी देखता है उसे सर्कस के किरदार नजर आते हैं या आपराधिक रणनीति द्वारा सत्ता हथियाने को तत्पर किरदार नजर आते हैं ऐसे में वह अधिक बूरे विकल्प से कम बूरे विकल्प को चुनने को मजबूर है और इसी मजबूरी के चलते वह इन हारने और जीतने वालों से हारता जा रहा है और उसकी हार की किसी को चिंता नहीं है ऐसे में यह महान राष्ट्र अपनी नियति के भरोसे गतिमान है और गति हमेशा प्रगति ही नहीं होती।

विचार क्रांति अभियान

संघ का अभियान विचार क्रांति का अभियान है। एक का विचार सबका विचार बने इस हेतु संघ ने एक से अनेक होने का मार्ग अपनाया है। साहित्य इस क्रांति का प्रबल सहयोगी है। संघ इस विचार क्रांति अभियान को गति देने को एक मासिक पत्रिका 'संघशक्ति' एवं एक पाक्षिक समचार पत्र 'पथ प्रेरक' प्रकाशित करता है। स्वयंसेवक समाज के अधिकतम लोगों तक ये पत्र-पत्रिका पहुंचाने के लिए ग्राहक सदस्यता अभियान चलाते हैं। संघ के जालोर संभाग के स्वयंसेवकों ने इस अभियान को 'विचार क्रांति अभियान' का नाम दिया एवं 18 जुलाई को मोरुआ शाखा में स्नेहमिलन कर इसकी शुरुआत की। आहोर मंडल के स्वयंसेवकों ने विगत दिनों इस अभियान के तहत 100 ग्राहक सदस्य बनाए हैं। सांचौर में भी इसी प्रकार का प्रयास किया गया। इसी प्रकार का नियोजित प्रयास मुंबई शाखा के स्वयंसेवकों ने भी किया है।

खरी-खरी

धर्म से भ्रम के विक्रेता

सुबह-सुबह शहरों में सड़कों के किनारे कुछ लोग हरे चारे की छोटी-छोटी पुळिया लेकर बैठे रहते हैं। कुछ स्थानों पर ऐसे लोग सुबह-सुबह मुख्य चौराहों पर भी मिल जाते हैं। इन लोगों के हाथ में एक डंडा होता है और गायें इनके चारों ओर कातर नजरों से निहारती रहती हैं। ज्यों ही कोई गाय इनकी तरफ बढ़ती है, विक्रेता के हाथ का डंडा खाने को मजबूर होती है। राह से गुजरने वाले लोग 10 रुपए खर्च कर एक पुळी खरीद कर धर्मात्मा बनते हैं और धर्मात्मा बनने की इस भ्रम में सड़क पर अराजकता फैलाते हैं। इस भ्रम का विक्रेता फिर डंडा लेकर गायों के सामने खड़ा होता है। जरा विचार कीजिए हमने धर्म को किस रूप में समझा है और हमारी इस समझ के कारण ईश्वर तक की यात्रा को प्रतिपादित करने वाली संस्कृति को किस प्रकार अव्यवस्था का कारक बना दिया है। यह बात केवल यहीं सीमित नहीं होती। आजकल शहरों के लोगों में धर्मात्मा बनने का एक नया तरीका प्रचलन में है। सुबह-सुबह घर से रात की बची रोटियां लेकर निकलते है और सड़क पर जाकर कुत्तों को डालते हैं। सड़क पर रोटियों के पीछे दौड़ते ये कुत्ते किसी न किसी दुपाहिया वाहन के लिए दुर्घटना का कारण बनते हैं और उन तथाकथित धर्मात्माओं के धर्म के भ्रम का शिकार उन्हें बनना पड़ता है। महिलाओं को इन धर्म के भ्रम के विक्रेताओं ने अलग ही मार्ग मोक्ष (?) का पकड़ा रखा है। वे अपने आस-पास खाली पड़े भूखण्ड में चीटियों को ढूंढती हैं और वहां आटा डालकर और चींटियों को आमंत्रित करती हैं। परिणाम स्वरूप उस भूखण्ड को चीटियां खोखला करती रहती हैं और धर्म के भ्रम में फंसे धर्मात्मा किसी भले आदमी के भूखण्ड को खोखला करते रहते है। ऐसे ही अनेकों उदाहरण हमें हमारे आसपास धर्म के नाम पर पले भ्रमों के मिल जाएंगे और इन भ्रमों के फंसे लोग धर्म के वास्तविक अर्थ की ओर बढ़ ही नहीं पाते।

निश्चित रूप से किसी भूखे प्राणी को भोजन कराना पुण्य कर्म है लेकिन साथ-साथ यह भी देखना चाहिए कि हमारा पुण्य किसी बड़े पाप का कारण तो नहीं बन रहा है। हमारा पुण्य कहीं हमारे नागरिक भाव पर चोट तो नहीं कर रहा है। लेकिन इन धर्म के भ्रम के विक्रेताओं ने इन बातों को इतना व्यक्तिगत बना दिया है कि इनके पीछे का मर्म कहीं खो गया है और केवल ढकोसला ही शेष बचा है। इस ढकोसले के कारण न केवल नागरिक भाव का ह्रास हो रहा है बल्कि हमारी महान संस्कृति को हम केवल ढकोसलों तक सीमित कर रहे हैं। ये सभी पुण्य कर्म धर्म के मूल स्वरूप से बहुत पहले की बाते हैं। इस देश का दुर्भाग्य रहा कि धर्म की परिभाषा से दूर तक रिश्ता न रखने वाले लोगों ने धर्म की ठेकेदारी संभाल ली और इन्हीं ठेकेदारों ने धर्म के नाम पर इस प्रकार के भ्रमों का विक्रय कर अपनी आजीविका सुरक्षित की। उन्हें अपनी आजीविका कमाने से रोकना कोई उद्देश्य नहीं है लेकिन इस चक्कर में हम सब धर्म से दूर होते गए। धर्म से दूर जाने के कारण धर्म के मूल स्रोत से हम अनजान होते गए और केवल कुछ सांसारिक कृत्यों को ही धर्म का नाम देकर धर्म को संसार से पार ले जाने वाली विद्या से गिराकर इस संसार की ही एक वस्तु बना दिया। धर्म पुण्य कर्मों की प्रेरणा है और होना भी चाहिए। लेकिन पुण्य कर्म धर्म नहीं है। दार्शनिक भाषा में तो हम जिसे कर्म समझते हैं उसके निशेष होने पर धर्म प्रारम्भ होता है लेकिन इतनी गहराई में हम न जा पाए तो कम से कम इतना तो अवश्य ध्यान रखें कि हमारे अपने व्यक्तिगत पुण्य कर्मों के लिए व्यवस्था को छिन्न-भिन्न न करें, हमारे नागरिक भाव को तिरोहित न करें। यदि हम ऐसा करने लगे तो फिर हमारे मंदिरों के निकट प्लास्टिक का जमावड़ा नहीं होगा। निर्जला एकादशी पर सड़कों पर यत्र तत्र प्लास्टिक के गिलास बिखरे नहीं मिलेंगे, सड़कों पर आवारा गायों एवं कुत्तों के कारण होने वाली दुर्घटनाएं कम होगीं और इससे भी आगे जाएं तो जोड़ने का आधार धर्म तोड़ने का साधन नहीं बनेगा। कुटिल एवं कुत्सित लोगों के षड्यंत्र बंद हो जाएंगे और धर्म के नाम पर भ्रम बेचने वाले लोग हतोत्साहित होंगे जिसमें हम इस भ्रम से निकलकर वास्तविक धर्म को ओर अग्रसर होंगे वे तो आइए इस भ्रम से निकलने की शुरुआत करें।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि.	12.08.2018 से 15.08.2018 तक	**सूरत** (गुजरात)
2.	प्रा.प्र.शि.	12.08.2018 से 15.08.2018 तक	ओम महादेव गिरी बापू आश्रम, वापे पाडा शाहपुर (आसन गांव) मुंबई। नजदीक रेलवे स्टेशन आसनगांव से 3 किमी दूर मुंबई नासिक हाईवे पर।
3.	प्रा.प्र.शि.	17.08.2018 से 19.08.2018 तक	**सरसाव,** तहसील कड़ी, जिला-मेहसाणा (गुजरात)।
4.	प्रा.प्र.शि.	17.08.2018 से 19.08.2018 तक	**गांधीनगर,** समर्पण कॉलेज, सेक्टर 28, गांधी नगर (गुजरात)।
5.	प्रा.प्र.शि.	18.08.2018 से 21.08.2018 तक	**बैण्यांकाबास,** (जयपुर), हिंगोनिया से 3 किमी दूर।
6.	प्रा.प्र.शि.	18.08.2018 से 21.08.2018 तक	**खवा रावजी,** जिला-दौसा।
7.	प्रा.प्र.शि.	18.08.2018 से 20.08.2018 तक	**दूदोसण** (गुजरात), सगत माताश्री का मंदिर, सुईगाम-झझाम मार्ग।
8.	प्रा.प्र.शि.	19.08.2018 से 22.08.2018 तक	**कारटिया** (बाड़मेर), सेड़वा से धोरीमन्ना मार्ग पर, हर घंटे बस सुविधा।
9.	प्रा.प्र.शि.	19.08.2018 से 22.08.2018 तक	**करणू** (नागौर)। नागौर-फलोदी मार्ग पर स्थित।
10.	प्रा.प्र.शि.	19.08.2018 से 22.08.2018 तक	**धोबा** (जैसलमेर)। जैसलमेर, खुहड़ी, म्याजलार से से बसें उपलब्ध।
11.	प्रा.प्र.शि.	19.08.2018 से 22.08.2018 तक	**पून्दलसर (बीकानेर),** श्री डूंगरगढ़ से बीदासर मार्ग पर। **सम्पर्क :** जेठूसिंह पून्दलसर-99280-70252.
12.	प्रा.प्र.शि.	19.08.2018 से 22.08.2018 तक	**गुड़ामालानी**-परमहंस पब्लिक स्कूल, रावत पृथ्वीराजगढ़ नयानगर, गुड़ामालानी से बालोतरा मार्ग पर हर समय साधन उपलब्ध।
13.	प्रा.प्र.शि.	19.08.2018 से 22.08.2018 तक	**हरसाणी** (बाड़मेर), माल्हण मंदिर हरसाणी, बाड़मेर व शिव से बसें उपलब्ध।
14.	प्रा.प्र.शि.	19.08.2018 से 22.08.2018 तक	**रोहिचा कलां** (लूणी जोधपुर), दलेखां चक्की जोधपुर से बसें उपलब्ध।
15.	प्रा.प्र.शि.	19.08.2018 से 22.08.2018 तक	**लोड़ता** (शेरगढ़-जोधपुर)।
16.	प्रा.प्र.शि.	19.08.2018 से 22.08.2018 तक	**रूद** (चित्तौड़गढ़)।
17.	प्रा.प्र.शि.	19.08.2018 से 22.08.2018 तक	भूतेश्वर महादेव **पूरण** (जालोर)। मालवाड़ा से सूंधा माताजी मार्ग पर।
18.	प्रा.प्र.शि.	19.08.2018 से 22.08.2018 तक	धवाली माता **उम्मेदगढ़ लोटीवाड़ा** (सिरोही)। जावाल व सियाणा से बसें उपलब्ध।
19.	प्रा.प्र.शि.	19.08.2018 से 22.08.2018 तक	**नाडोल (पाली)**। रानी, पाली व देसूरी से बसें उपलब्ध।
20.	प्रा.प्र.शि.	19.08.2018 से 22.08.2018 तक	गजन माता मंदिर, **धर्मधारी,** पाली। पाली से 10 किमी दूर, ओम बन्ना धाम के नजदीक।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें। उच्च प्रशिक्षण शिविर में आने वाले मेरी साधना पुस्तक साथ लेकर आवे।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

(पृष्ठ एक का शेष)

युवा मार्गदर्शन...

चित्तौड़गढ़ में आयोजित कार्यशाला में भारतीय राजस्व सेवा के अधिकारी एवं वर्तमान में राजस्थान क्षेत्र के पासपोर्ट कार्यालय के प्रभारी राजेन्द्रसिंह आंतरी, राजस्थान प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी महेन्द्र प्रताप सिंह गिराब, दलपतसिंह गुड़ाकेशरसिंह, लक्ष्मणसिंह जसोल, धनसिंह कालेवा, गजेन्द्र सिंह जोधा आदि युवाओं के मार्गदर्शन के लिए उपस्थित हुए। चित्तौड़गढ़ के पंचायत समिति सभागार में 22 जुलाई को आयोजित इस कार्यक्रम में शहर में रहने वाले युवाओं के साथ-साथ वरिष्ठजन भी उपस्थित हुए। वक्ताओं ने लक्ष्य बड़ा बनाकर तद्नुकूल परिश्रम करने की आवश्यकता बताई। प्रशासनिक सेवाओं में जाने को लेकर युवाओं में बने भ्रमों को दूर करते हुए बताया गया कि परिश्रम करने वाला सदैव सफल ही होता है, उसकी सभी प्रकार की विपरीत परिस्थितियां भी इसमें सहायक बन जाती हैं। इसलिए किसी भी प्रकार की परिस्थिति का बहाना न बनाकर बड़ा लक्ष्य बनाकर तद्नुकूल तैयारी की जानी चाहिए। विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से यह बात स्पष्ट की गई। औपचारिक उद्बोधन के पश्चात् हुए संवाद में संभागियों द्वारा प्रस्तुत विभिन्न शंकाओं का निराकरण कर विषय को और अधिक स्पष्ट किया गया। कार्यक्रम में विधायक चन्द्रभानसिंह अक्या एवं प्रधान प्रवीणसिंह के साथ-साथ संघ के संभाग प्रमुख गंगासिंह साजियाली, जौहर स्मृति संस्थान के कोषाध्यक्ष नरपतसिंह भाटी, भूपाल स्कूल के एमडी लालसिंह भाटी आदि वरिष्ठ जन भी उपस्थित रहे। सभी ने संघ की इस पहल की सराहना की।

अधिवक्ता प्रकोष्ठ के तत्वावधान में युवा मार्गदर्शन एवं संवाद कार्यशाला श्री करणी छात्रावास सरदारशहर में रखी गई। इसमें कार्यक्रम की भूमिका बताते हुए कहा गया कि आजादी के बाद पनपी व्यवस्था के प्रति हमारे समाज में नकारात्मक भाव पैदा हुआ, हमने मान लिया की यह व्यवस्था हमारे विरुद्ध पनपी है इसलिए व्यवस्था को अपनाने का भाव पैदा नहीं हुआ और परिणाम स्वरूप हम वर्तमान व्यवस्था में उपलब्ध साधनों का उपयोग नहीं कर पाए। माननीय संघ प्रमुख श्री के निर्देश पर संघ के अधिवक्ता प्रकोष्ठ ने समाज के युवाओं को इन साधनों से अवगत करवाने के लिए इन कार्यशालाओं को प्रारम्भ किया है। कार्यशाला को संबोधित करते हुए सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्ता यशवर्धनसिंह झेरली ने कहा कि लड़ना हमारे स्वभाव में है लेकिन वर्तमान में लड़ाई का प्रारूप बदल गया है। हमने यदि बदले हुए प्रारूप के अनुरूप साधनों का उपयोग नहीं किया तो पिछड़ जाएंगे। पिछड़ने से बचने के लिए हमें लड़ने के संवैधानिक साधनों का उपयोग करना चाहिए। सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 इस क्षेत्र में हमारा बड़ा साधन सिद्ध हो सकता है। इसके अलावा उन्होंने सम्पर्क पोर्टल, उपभोक्ता अधिनियम, जनहित याचिका आदि की प्रक्रिया के बारे में विस्तार से जानकारी दी। सम्पर्क पोर्टल हेतु राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध करवाए गए फोन नम्बर 181 का कैसे उपयोग किया जाए इसका प्रायोगिक प्रदर्शन भी किया गया। सोशल मीडिया के दुरुपयोग के कारण होने वाले दुष्परिणामों के बारे में भी अवगत करवाया गया। संभागीयों के विभिन्न प्रश्नों के उत्तर देते हुए विषय को और अधिक स्पष्ट किया गया। अंत में यह बताया गया कि ये सभी साधन हैं और यदि दूषित मनोवृत्ति से साधन का उपयोग किया जाए तो यह विनाशक भी हो सकता है इसलिए हमें हमारी मनोवृत्ति को क्षत्रियत्व के अनुकूल रखते हुए इसका उपयोग करना चाहिए। हमारी मनोवृत्ति को क्षत्रियत्व के अनुकूल बनाने के लिए हमें श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखाओं एवं शिविरों में जाना चाहिए। कार्यशाला में वरिष्ठ स्वयंसेवक सुमेरसिंह गुड़ा, करणी छात्रावास समिति के अध्यक्ष विक्रमसिंह बिल्यु, चुरू राजपूत छात्रावास समिति के अध्यक्ष राजपालसिंह टांई, मदनसिंह निर्बाण, डॉ. मुलायमसिंह राजवी, गजेन्द्रसिंह मदास आदि वरिष्ठजन भी उपस्थित थे। कार्यक्रम की व्यवस्था का जिम्मा सत्येन्द्रसिंह लाखलाण, अनोपसिंह शिमला आदि ने निभाया।

भजन किसका करें? - 8

महाकुम्भ के अवसर पर चण्डीद्वीप (हरिद्वार) में दिनांक 10.04.1983 ई. की जनसभा में परमपूज्य स्वामी श्री अड़गड़ानन्दजी का प्रवचन। 'भजन किसका करें' नामक छोटी सी पुस्तक में संग्रहित है। उसी पुस्तक को धारावाहिक रूप से यहां छापा जा रहा है। प्रस्तुत है गतांक से आगे का भाग।

ॐ श्री परमात्मने नमः

- **जन्त्र मन्त्र सब भरम हैं, भूत-प्रेम अरु देव।**
  अड़गड़ सांचे गुरु बिना, कैसे पावे भेव।।
- **अड़गड़ यहि संसार में, विष और अमृत दोय।**
  मूरख चाहत विषय विष, भक्त सुधामय होय।।

- **ब्रह्मचर्य** : मन से विषयों का चिन्तन न करते हुए एक परमात्मा का निरन्तर चिन्तन ही ब्रह्मचर्य का आचरण है। इससे जननेन्द्रिय ही नहीं सकल इन्द्रिय संयम सहज है।
- **भजन साधना की निर्दिष्ट विधि** : एक परमात्मा में श्रद्धा तथा परमत्त्व का परिचायक कोई दो-ढाई अक्षर के नाम - ॐ या राम का जप तथा किसी आत्मदर्शी, तत्त्ववेत्ता महापुरुष (सद्गुरु) का सान्निध्य, सेवा एवं ध्यान से भजन की शुरुआत होती है।
- **सद्गुरु** : जो संसार सागर को पार करने के लिए सेतुरूप हैं, जो समस्त विधाओं के उद्गम स्थल हैं, जो समस्त पुण्य कर्मों के करण-कारण हैं अतः ऐसे कल्याणकारी शिव स्वरूप सद्गुरु का सतत् स्मरण, उनके निर्देशन में ध्यान करना चाहिए।
- संसार में सबसे बड़ा हितैषी व दयालु अगर कोई है तो वह सिर्फ तत्त्वदर्शी (सद्गुरु) है और कोई नहीं। पूर्ण समर्पण से उनकी ओट में रहने वाले भक्त का संसार की कोई भी विपत्ति कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती है।
- **धर्म** : धार्मिक उथल-पुथल को छोड़ एकमात्र मेरी शरण में हो अर्थात् एक भगवान के प्रति पूर्ण समर्पण ही धर्म का मूल है। उस प्रभु को पाने की नियत विधि का आचरण ही धर्माचरण है और जो उसे करता है, वह अत्यन्त पापी भी शीघ्र धर्मात्मा हो जाता है।
- विधाता और उससे उत्पन्न सृष्टि नश्वर है। ब्रह्मा और उससे निर्मित सृष्टि, देवता और दानव दुःखों की खान, क्षणभंगुर और नश्वर है।
  - **अनुभव गुरु की बात है, हृदय बसे दिन रात।**
    पलक-पलक अरु स्वांस में, विपुल भेद दर्शात।।
- गीता के अनुसार जो पुनर्जन्म का कारण है वह पाप है और जो परमात्मा को दिलाता है उस नियत विधि (कर्म) का आचरण ही पुण्य कर्म है। तत्त्वस्थित महापुरुष (सद्गुरु) में श्रद्धा उस परमात्मा को विदित करने का तरीका है।
- **गुरु कौन है?** जो केवल हित का उपदेश करता है।
- **मानव-तन की सार्थकता** : सुखरहित क्षणभंगुर किन्तु दुर्लभ मानव तन को पाकर मेरा भजन कर अर्थात् भजन का अधिकार संसार भर के मानव मात्र को है।
- **ईश्वर का निवास** : वह सर्वसमर्थ, सदा रहने वाला परमात्मा मानव के हृदय में स्थित है। सम्पूर्ण भावों से उसकी शरण में जाने का विधान है जिससे शाश्वत धाम, सदा रहने वाली शान्ति की प्राप्ति होती है।
- **'विप्र' एक स्थिति** : क्रियात्मक पथ पर चलकर ब्रह्म की अनुभूति करने वाले ब्राह्मण (विप्र) हैं। वह क्रिया है - केवल परमात्मा में निष्ठा।
- **भगवत् पथ में बीज का नाश नहीं** : उस आत्मदर्शन की क्रिया का स्वरूप आचरण भी जन्म-मरण के महान भय से उद्धार करने वाला है।
- जो एक मात्र सद्गुरु में श्रद्धा और एक मात्र परमात्मा का नाम ॐ अथवा राम का सुमिरन करता है, वह क्रिया को न जानते हुए भी क्रियावान है।
- सब बात सब कोई जानते हैं, दो-दो पैसे में वेदान्त बिकते हैं किन्तु योग-साधना लिखने में नहीं आती। किसी अनुभवी महापुरुष द्वारा किसी अधिकारी साधक के हृदय में जागृत हो जाया करती है।
- सत्य वस्तु का तीनों कालों में अभाव नहीं है और असत्य वस्तु का अस्तित्व नहीं है। आत्मा ही तीनों कालों में सत्य है, शाश्वत है, सनातन है। उसके प्रति श्रद्धा ही धर्म का मूल है।
- सद्गुरु जैसा प्रेमपूर्ण, हितचिन्तक, कृपालु विश्वभर में दूसरा कोई नहीं है। प्रभु की अहैतुकी कृपा से ही सद्गुरु के दर्शन होते हैं।
- 'गुरु के वचनों में गुंजाइश कलियुग की तिकड़मबाजी।' गुरु के आदेशों में घट-बढ़ नहीं करना चाहिए अन्यथा काल की कुटिल चाल है।
- **ईश्वर देखा जा सकता है** - अनन्य भक्ति के द्वारा मैं प्रत्यक्ष देखने, जानने तथा प्रवेश करने के लिए भी सुलभ हूं। (गीता, 11/54)
- विश्व में प्रचलित सम्पूर्ण विचारों के आदि उद्गम स्थल भारत के समस्त अध्यात्म और आत्मस्थिति दिलाने वाले सम्पूर्ण शोध के साधन-क्रम का स्पष्ट वर्णन गीता में है जिसमें ईश्वर एक, पाने की क्रिया एक तथा परिणाम एक है - वह है प्रभु के दर्शन, भगवत्-स्वरूप की प्राप्ति और काल से अतीत अनन्त जीवन।
- गीता के ही एकेश्वरवाद को विश्व की विविध भाषाओं में मूसा, ईसा तथा अनेक सूफी सन्तों ने फैलाया। भाषान्तर होने से ये पृथक-पृथक प्रतीत होते हैं किन्तु सिद्धान्त गीता के ही हैं। अतः गीता मानव मात्र का अतर्क्य धर्मशास्त्र है।
- गीता के अनुसार एक ही प्राप्त करने योग्य देव है। आत्मा ही सत्य है। सिवाय आत्मा के कुछ भी शाश्वत नहीं है। उन महान योगेश्वर ने कहा- अर्जुन ओम् - अक्षय परमात्मा के नाम का जप कर और ध्यान मेरा धर। एक ही कर्म है - गीता में वर्णित परमदेव एक परमात्मा की सेवा। उन्हें श्रद्धा से अपने हृदय में धारण करो।
- भगवान श्रीकृष्ण के हजारों वर्ष पश्चात् परवर्ती जिन महापुरुषों ने एक ईश्वर को सत्य बताया - गीता के ही सन्देशवाहक हैं। ईश्वर से ही लौकिक, परलौकिक सुखों की कामना, ईश्वर से डरना, अन्य किसी को ईश्वर न मानना - यहां तक तो सभी महापुरुषों ने बताया किन्तु ईश्वरीय साधना, ईश्वर तक की दूरी तय करना, अनामय परमपद प्राप्त करना - यह केवल गीता में सांगोपांग क्रमबद्ध सुरक्षित है।

देखें गीताभाष्य **'यथार्थ गीता।'**

प्रतिभाएं

महावीर सिंह भाटी पुत्र उगम सिंह भाटी गांव उण्डू (बाड़मेर) ने आरबीएसई विज्ञान वर्ग में 83.40 प्रतिशत।

चांदकंवर : चांदकंवर पुत्री करणपालसिंह जालेऊ (चुरू), कक्षा दसवीं में 87.00 प्रतिशत।

पवन कंवर : पवन कुंवर पुत्री धर्मेन्द्रसिंह जिनजिनयाला (जोधपुर), दसवीं कक्षा में 78.83 प्रतिशत।

आयुवानसिंह पुत्र केशरसिंह खारिया-मीठापुर ने आरबीएसई की 12वीं परीक्षा में 74.4 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

महेन्द्रसिंह : महेन्द्रसिंह पुत्र किशोरसिंह सेखाला (जोधपुर) कक्षा दसवीं में 78.33 प्रतिशत।

माण्डवी कंवर राठौड़ पुत्री योगेन्द्रसिंह जामोला सीबीएसई की 12वीं परीक्षा में 82 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

सो रजपूती शान

महाभड़ां जुद्ध मारकां, गा गौरव रा गान।
खाटी कीरत खाग बळएसो रजपूती शान।।

*****

मिटिया सूरा मोद सूं, कोख ऊजाळण कांण।
अणगिण इण इळ ऊपरां, सौ रजपूती शान।।

*****

सूरा धरती सींच दी, वध-वध कर बलिदान।
दृग खौलत राती दिखे, सो रजपूती शान।।

*****

अबला रै आधार हित, पटाधरां दे प्राण।
लिखिया खड़गां लेखड़ां, सो रजपूती शान।।

*****

बाळ जवान'र बूढिया, सांप्रत रख सम्मान।
हरवळ प्राण ज होमिया, सो रजपूती शान।।

*****

अंतस राखै ऊजळौ, सांसां स्वाभिमान।
नैह अणूतौ नैण में, सो रजपूती शान।।

आगे जाय'र ऊभिया, ठेट हिंयै सूं ठान।
मायड़ रै हित मारकां, सो रजपूती शान।।

*****

कदै न होसी कोटड़ी, वीरां री वीरान।
ऊभा राखण आज अै, सो रजपूती शान।।

*****

बणिया गायां वाहरू, अड़िया हो अगवांण।
भिड़िया लड़िया भोमिया, सो रजपूती शान।।

*****

सबळ सपूती सार नै, कूंती वीरत कांण।
मजबूती धारी मनां, सो रजपूती शान।।

*****

काढ दिया निज काळजा, मांड गाथ महाराण।
डांड गाड़ रण आंगणै, सो रजपूती शान।।

महेंद्रसिंह छायण,
पोकरण

गोपालसिंह बिजावल का देहावसान

संघ के ऊर्जावान एवं सेवाभावी युवा स्वयंसेवक **गोपालसिंह बिजावल** का 29 जुलाई को देहावसान हो गया। 22 वर्षीय गोपालसिंह 2008 में बीजावल में आयोजित प्रा.प्र.शि. में संघ के सम्पर्क में आए। 2012 के भाखरपुरा मा.प्र.शि. के बाद नियमित सक्रिय हुए। इन्होंने विगत 10 वर्ष से 7 उ.प्र.शि., 7 मा.प्र.शि., 2 विशेष शिविर एवं 13 प्रा.प्र.शि. किए। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें एवं परिजनों को यह दारुण दुःख सहन करने की क्षमता देवें।

गोपालसिंह बिजावल

गौरीशंकर दीपपुरा को मातृशोक

संघ के शेखावाटी संभाग के संभाग प्रमुख गौरीशंकर दीपपुरा की माता **श्रीमती जोरावर कंवर** का देहावसान 25 जुलाई को हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिवार के लिए हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

श्रीमती जोरावर कंवर

सवाईसिंह जी खुड़दी का देहावसान

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान के पूर्व सचिव एवं संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **सवाईसिंह खुड़दी** का विगत 12 जुलाई को देहावसान हो गया। 11 जुलाई 1939 को सीकर जिले के खुड़दी गांव में जन्मे सवाईसिंह 1951 में पूज्य तनसिंह जी के सम्पर्क में आए एवं 1951 के कीतलसर (नागौर) प्रा.प्र.शि. में पहली बार आए। 1956 के भिणाय उ.प्र.शि. से संघ में नियमित सक्रिय हुए और पढ़ाई बीच में छोड़कर भू-स्वामी आंदोलन में शामिल हो गए। 2 वर्ष बाद पूज्य तनसिंह जी के निर्देश पर पुनः अध्ययन आरंभ किया व पढ़ाई के बाद सरकारी अध्यापक बने। अध्यापक से व्याख्यात, प्रधानाध्यापक, प्रधानाचार्य, जिला शिक्षा अधिकारी, उपनिदेशक, संयुक्त निदेशक तक होते हुए माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सचिव पद से सेवानिवृत हुए। अपने जीवन में आपने 8 प्रा.प्र.शि., 8 मा.प्र.शि. व 8 उ.प्र.शि. किए। आपकी पुत्री का विवाह संघ के स्वयंसेवक रामसिंह माडपुरा से हुआ एवं पुत्र सुरेन्द्रसिंह सरकारी सेवा में डीआईजी जेल, रेंज उदयपुर के पद पर कार्यरत है। आप संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक राजेन्द्रसिंह बोबासर के जीजोसा थे।

सवाईसिंह खुड़दी

लादुसिंह पीपरली का देहावसान

जोधपुर के पीपरली गांव निवासी एवं संघ के स्वयंसेवक हेमेन्द्रसिंह पीपरली के दादोसा **लादुसिंह पीपरली** का 15 जुलाई को देहावसान हो गया। उन्होंने अपने गांव में समाज बंधुओं को प्रेरित कर संघ के तीन शिविर लगावाए। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है एवं दिवगंत आत्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

लादुसिंह पीपरली

दुःखद अवसान

गुजरात में संघ के सहयोगी एवं उच्च प्रशिक्षण शिविर बेटद्वारिका के मेजबान रहे हेमुभा (हेमतसिंह) वाढ़ेर की धर्मपत्नी **श्रीमती मानकंवर बा** का 18 जुलाई को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति सांत्वना प्रकट करता है एवं दिवगंत आत्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

श्रीमती मानकंवर बा

(पृष्ठ एक का शेष)

क्षत्रिय गुमराह...

गुरुपूर्णिमा के अवसर पर देश के कोने-कोने से भक्तजन वाराणसी के निकट स्थित परमहंस आश्रम शक्तेशगढ़ पहुंचे एवं स्वामीजी के दर्शन कर कृतार्थ हुए। माननीय संघ प्रमुख श्री भी प्रतिवर्ष की भांति अपने साथियों सहित स्वामीजी के दर्शनार्थ शक्तेशगढ़ पधारे। संघ की विभिन्न शाखाओं में भी गुरुपूर्णिमा पर्व मनाया गया। संघ के स्वयंसेवक के लिए पूज्य तनसिंह जी ही गुरु स्वरूप हैं जिन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ रूपी मार्ग प्रदान कर उसके जीवन को दिशा देने का प्रयास किया। इस मार्ग की यह विशेषता है कि इस पर आने वाले को केवल मार्ग पर बने रहना होता है, मार्ग स्वतः उसके विकास के द्वार खोलता रहता है और व्यक्ति अपने जीवन के शाश्वत उद्देश्य की ओर खिंचता चला जाता है। ऐसा अनूठा मार्ग देने वाले पूज्य तनसिंह जी एवं उनकी परम्परा में हुए मार्ग दर्शकों को शाखाओं के स्वयंसेवकों द्वारा गुरुपूर्णिमा के अवसर पर नमन किया गया एवं परमेश्वर से प्रार्थना की कि वह उन्हें इस मार्ग पर रहने में बाधक बनने वाली प्रतिकूलताओं से बचाएं।

केन्द्रीय...

बैठक में सभी प्रांत प्रमुखों ने अपने-अपने प्रांत की बैठक में तय की गई कार्य योजना प्रस्तुत की। संभाग प्रमुखों ने पूरे संभाग की एकीकृत योजना प्रस्तुत की। उनमें आवश्यक फेरबदल पर चर्चा की गई। तदुपरांत सभी संभागों की अलग-अलग बैठकें कर संभाग की कार्य योजना को अंतिम रूप दिया गया। शिविरों के स्थान, तारीखें तय की गई। प्राथमिक प्रशिक्षण शिविरों के संचालक तय किए गए। अंतिम प्रारुप संभागवार माननीय संघ प्रमुख श्री को बताए गए एवं उन्होंने आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया। इस वर्ष प्रा.प्र.शि. की संख्या बढ़ाने का निर्णय युवा टीम ने लिया है जिसका माननीय संघ प्रमुख श्री ने अनुमोदन किया एवं आगामी दिसम्बर माह तक राजस्थान, गुजरात के साथ-साथ मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, दिल्ली आदि क्षेत्रों में 150 से अधिक प्रा.प्र.शि. लगाना तय किया। इसके अलावा माध्यमिक प्रशिक्षण शिविरों, बालिका शिविरों के प्रस्तावित स्थान एवं संभावित तारीखें केन्द्र को सौंपी गई जिनके संचालक केन्द्रीय स्तर पर तय किए जाएंगे। शिविरों के अलावा शाखाओं की संख्या बढ़ाने की बात की गई। पूज्य तनसिंह जी, आयुवानसिंह जी, नारायणसिंह जी, महाराणा प्रताप, दुर्गादास, संघ स्थापना दिवस आदि पर्वों के साथ-साथ स्थानीय महापुरुषों की जयंती के रूप में लोक सम्पर्क को बढ़ाने की योजना भी प्रस्तुत की गई। प्रांतवार एवं संभाग वार सम्पर्क यात्राओं का कार्यक्रम भी बना। संघ साहित्य एवं संघशक्ति-पथप्रेरक की पाठक संख्या बढ़ाकर विचार क्रांति के अभियान को गति देने को लेकर भी चर्चा की गई। प्रांत के प्रत्येक स्वयंसेवक को उसकी रूचि के अनुरूप काम मिले इसके लिए भी चर्चा की गई। माननीय संघ प्रमुख श्री ने आशीर्वाद स्वरूप व्यक्तिगत जीवन को सांघिक जीवन में बदलने की आवश्यकता हेतु सतत क्रियाशीलता का आह्वान किया। बैठक के उपरान्त सभी संभागी संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास की माता एवं वरिष्ठ स्वयंसेवक दीपसिंह बैण्यांकाबास की पत्नी के देहांत पर शोक प्रकट करने उनके गांव बैण्यांकाबास गए एवं अपनी शोकाभिव्यक्ति प्रकट की।

(पृष्ठ दो का शेष)

गुरुशिखर...

वर्तमान जूना गढ किला बीकानेर की नींव अपने हाथ से विक्रम संवत् 1545 वैशाख सुद दूज शनिवार को रखी।

देवी मां करणी जी के अनेक चमत्कार हैं। जैसलमेर के महारावल जैतसी की असाध्य बीमारी को ठीक करने जैसलमेर गई। वहां एक जन्म से अंधे सुथार को अपनी मूर्ति बनाने का आदेश दिया, वही मूर्ति आज देशनोक के मुख्य मंदिर में स्थापित है। सुथार के आंखों में रोशनी आ गई। जैसलमेर बीकानेर राज्यों की सीमाओं के झगड़े को उन्होंने हमेशा-हमेशा के लिए मध्यस्थता कर मिटा दिया।

विक्रम संवत् 1595 चैत्र सुदी नवमी को मां करणी ने अपना शरीर त्यागा। देशनोक में महाराजा गंगासिंह जी बीकानेर ने मां के मंदिर को नवीन भव्य रूप प्रदान किया। इस मंदिर में अनेकों चूहे हैं। जिन्हें काबा कहा जाता है। सफेद रंग का चूहा दिखने पर भाग्य का प्रतीक माना जाता है। मंदिर में अनेक चूहे होने के उपरान्त भी कभी संक्रमण नहीं फैलता है।

मां आवड़ व मां करणी का जन्म चारण कुल में हुआ है परन्तु ये सभी समाजों में बड़ी श्रद्धा के साथ पूजी जाती हैं। मां आवड़ जी भाटी राजपूतों एवं मां करणी राठौड़ों की आराध्य देवी हैं।

जीवनोपयोगी...

(16) B.Sc in Environmental Sciences
(17) B.F.Sc in बैचलर इन फिशरीज साईन्स
(18) B.Sc MLT - बैचलर ऑफ साईन्स इन मेडिकल टेक्नोलॉजी
(19) B.Sc in Occupational Therapists
(20) B.Sc in Audiology
(21) B.Sc in Speach and Language Pathology
(22) B.Sc. in Radiography
(23) B.Sc. in Rehabilitation therapy
(24) B.Sc in Food Technology
(25) B.Sc in Nutrution and Dietetics
(26) B.Sc in Anthropology
(27) B.Sc in Home Science

उपरोक्त सूची से स्पष्ट है कि जीव-विज्ञान (Biology) विषय के साथ 12वीं के पश्चात् चिकित्सक बनने के अतिरिक्त अनेकों अन्य विकल्प भी उपलब्ध हैं। आगामी अंकों में हम इनमें से प्रमुख कोर्स/डिग्री तथा उनमें प्रवेश की प्रक्रिया पर विस्तृत चर्चा करेंगे।

(क्रमशः)

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

सामूहिक शाखा बाड़मेर

ऑनलाइन कवि सम्मेलन

राजपूत साहित्यकारों के वाट्सएप समूह 'कलम अर कटार' ने 19 जुलाई को अपने स्थापना दिवस पर ऑनलाइन कवि सम्मेलन का आयोजन किया। देर रात तक चले कवि सम्मेलन में 30 से अधिक राजपूत रचनाकारों ने वाट्सएप समूह में अपनी प्रस्तुति दी। राजस्थान प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी श्रवणसिंह राजावत के संरक्षकत्व में बने इस समूह से कई स्थापित एवं नवोदित साहित्यकार जुड़े हैं। इन सभी की रचनाओं का एक संग्रह 'कलम अर कटार' के नाम से विगत वर्ष प्रकाशित भी हो चुका है।

वीर मुकुन्ददास खींची की जयंती मनाई

महान क्षत्रिय दुर्गादास के निकटतम सहयोगी मुकुंददास खींची की 386वीं जयंती जोधपुर स्थित सूचना केन्द्र के मिनी ऑडिटोरियम में 16 जुलाई को समारोहपूर्वक मनाई गई। मुख्य अतिथि सेवानिवृत न्यायाधीश गोपाल कृष्ण व्यास ने कहा कि मारवाड़ में अनेक महापुरुष पैदा हुए जिन्होंने धर्म और राष्ट्र के लिए अपना बलिदान दिया। ऐसे सभी महापुरुषों की जीवन गाथा हम सबके लिए प्रेरणादायी है एवं इसे जन-जन तक पहुंचाया जाना चाहिए। राजस्थान बीज निगम के अध्यक्ष शंभुसिंह खेतासर ने जोधपुर में मुकुन्ददास खींची की अश्वारूढ प्रतिमा एवं पेनोरमा निर्माण के लिए हर संभव प्रयास करने का आश्वासन दिया। मुख्य वक्ता डॉ. जुहूर खां मेहर ने वीर मुकुंददास के त्याग एवं स्वामिभक्ति के बारे में विस्तार से जानकारी दी। संयोजक

करणसिंह उचियारड़ा, मोहनसिंह उचियारड़ा ने भी विचार व्यक्त किए। समारोह में खींची चौहान शोध संस्थान इन्द्रोका की ओर से प्रकाशित पुस्तक मुकुन्ददास खींची का लोकार्पण भी किया गया। इसके अलावा जम्मू-कश्मीर में शहीद हुए पाबूराम थोरी की पत्नी मुन्नीदेवी सहित विशिष्ट योग्यता हासिल करने वाली प्रतिभाओं को शॉल एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। जोधपुर स्थित संघ कार्यालय 'तनायन' में भी 16 जुलाई को मुकुंददास खींची जयंती मनाई गई जिसमें सह प्रांत प्रमुख भवानीसिंह पीलवा ने मुकुंददास खींची के दुर्गादास जी के प्रति अनुचरत्व के भाव, वीरता एवं स्वामी भक्ति से सीख लेने की आवश्यकता जताई।

ओसियां में स्नेहमिलन

जोधपुर संभाग के ओसियां कस्बे में संघ के कर्मचारी प्रकोष्ठ एवं व्यवसायिक प्रकोष्ठ का संयुक्त स्नेहमिलन शक्ति वाटिका में संपन्न हुआ। स्नेहमिलन में युवाओं को दिशा बोध एवं मार्गदर्शन के लिए कर्मचारियों व व्यवसायियों को मिलकर एक प्लेटफार्म तैयार करने का आह्वान किया गया। कर्नल नारायणसिंह बेलवा ने कहा कि समाज के लिए सभा भवन, छात्रावास बनाना आवश्यक है लेकिन इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण आने वाली पीढ़ी का मार्गदर्शन करना है इसलिए इसकी ठोस कार्य योजना बनाकर कार्य किया जाना चाहिए। भैरूसिंह बेलवा ने छोटे-छोटे कार्यक्रमों के माध्यम से निचले स्तर तक मार्गदर्शन की आवश्यकता जताई। राजपूत सभा ओसियां के अध्यक्ष योगेन्द्रसिंह खेतासर ने सामूहिक प्रयास की आवश्यकता जताई। ओसियां में तहसील स्तरीय युवा मार्गदर्शन कार्यशाला रखने का निर्णय लिया गया।

जयंती विशेष : दुर्गादास राठौड़

आगामी 13 अगस्त को आंग्ल पंचांग अनुसार एवं श्रावण शुक्ला चतुर्दशी को भारतीय पंचांग अनुसार समाज चरित्र के आदर्श महापुरुष दुर्गादास जी की जयंती है। दुर्गादास राठौड़ के समकालीन तथा पश्चात् काल में होने वाले राजस्थान के कवियों ने मरुधरा की स्वाधीनता के उद्धारक उस अद्वितीय सेनानी के कार्यकलापों की प्रशंसा में प्रचुर काव्य रचनाएं अर्जित की है। प्रस्तुत हैं उनमें से एक रचना :

जूनी ढेलड़ी ज्यों जम्पै शायजादी, बंका जोध बिरूंधा।
औरंगसाह घरौ किम आवै, राह दुरग्गै रंधा।।1 ।।
हार न चीर न होस हुरम्मां, बोलै कातर बाणी।
नाह साह रंग महल न आवै, आडो भड़ आसाणी।।2।।
लागो खेध वेध धर लेबा, खत्री ऊबाणै खांडै।
आलम रो मारग अड़पायत, नींबाहरो न छाडै।।3।।
धरा काज धकै धूहड़ियो, स्याम धरम भुज साहै।
पड़बा भोम न दे पतसाहां, पतसाहां पिड़ गाहै।।4।।
मुगलां काज झुरै मुगलांणी, आंसू न्हांक अपारां।
मारु दुर्ग घरा दिसि मोकळ, हिन्दू स्याम हमारा।।5।।

अर्थात् बूढ़ी मयूरी की भांति कूकती हुई शाहजादियां कहती हैं - 'बादशाह ने इन बांके जोधारो को छेड़कर अच्छा नहीं किया। आज बादशाह का घर लौट आना (दक्षिण से दिल्ली आना) कठिन हो रहा है। राठौड़ दुर्गादास ने बादशाह के दक्षिण से उत्तर में आने के सभी रास्ते रोक रखे हैं।।1।। बेगम, जिन्हें घबराहट के मारे सुन्दर पोशाक और आभूषण पहिनने का होश तक नहीं रहा है, कातर वाणी से बोल रही हैं- अब क्या किया जावे, हमारे प्राणनाथ शहंशाह रंगमहल में कैसे आ सकेंगे- आसकरण का पुत्र दुर्गादास जो रास्ता रोके खड़ा है। यह राजपूत अपनी धरती वापिस लेने के लिए तलवार खींच कर युद्ध लड़ता बीच में खड़ा हुआ है-नीम्बा का यह पौत्र दुर्गादास बादशाह का रास्ता रोके खड़ा है। घूहड़ का वंशधर दुर्गादास स्वामिधर्म को धारण करता अपनी भूमि वापिस जीतने के लिए संघर्ष कर रहा है। जो राजपूत बादशाहों की धरती दबा कर भोगते आ रहे हैं, वे भला अपनी भूमि बादशाह के अधिकार में कैसे जाने देंगे। मुगल उमरावों की बेगमें अपने प्रियतमों के विरह में आसूं बहा रही हैं और कातर स्वर में पुकार कर विनती कर रही हैं- 'हे दयालु हिन्दू! मारवाड़ के वीर दुर्गादास! हम अबलाओं पर दया करके हमारे पतियों को सकुशल घर लौटाने के लिए रास्ता दे दे।'

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org